IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

श्रीमदभगवद गीता के नैतिक दर्शन की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उपयोगिता

डॉ. विनीता नायर
सहायक आचार्य, दर्शनशास्त्र विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
viniphilos@gmail.com

सारांश

इस शोध पत्र का उद्देश्य श्रीमदभगवद गीता के नैतिक दर्शन को उजागर कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इसकी उपयोगिता को स्पष्ट करना है। भगवदगीता एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें ना केवल तत्वमीमांसीय प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होता है अपितु कर्तव्य से सम्बन्धित नैतिक जिज्ञासा भी शान्त होती है। जो व्यक्ति जिस भाव से भगवदगीता का अध्ययन करता है उसी भाव से सत्य उसके समक्ष प्रकट होता है। किशोरावस्था के विद्यार्थी जीवन में अपरिपक्व मन अनेक प्रश्नों में उलझा हुआ रहता है, इस समय गीता में दिए हुए स्वधर्म, विहित कर्म, अनासक्त भाव से कर्म कैसे किया जाए, कर्मों का चयन किस प्रकार करें इत्यादि प्रश्न उसके मानस में उभरने लगते हैं। इस समय अर्जुन द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में श्री कृष्ण का ज्ञान अति उपयोगी सिद्ध होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इसका एक उद्देश्य विद्यार्थियों में अपनी भाषा एवं ग्रंथों के प्रति गौरव का भाव जगाना भी है। यदि गीता में से प्रकृत जीते जागते वे तथ्य ढूंढ कर विद्यार्थियों के समक्ष रख पाएं जिनसे संसार को समझने में उन्हें सहायता मिले तो यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक होगा।

संकेताक्षर : गीता का नीति शास्त्र, विहित कर्म, अनासक्त भाव, राष्ट्रीय शिक्षा नीति।

संदर्भ

[1]. तिलक, सर्वमान्य बाल गंगाधर, गीता रहस्य (कर्मयोगशास्त्र), 2016, जेड एक्स पब्लिकेशन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.5-6.

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

[2]. प्रसाद, इन्द्र मोहन, 'श्रीमद् भगवद गीता में भक्ति योग दर्शन', 2000, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, करमपुरा, नई दिल्ली, पृ.8.

[3]. निगम, डॉ. ब्रजबिहारी, श्रीमदभगवत् गीता (मदभगवत गीता का जीवन दर्शन) 1994, श्री कावेरी शोध संस्थान, 34 केशव नगर, गोधार, उज्जैन (म.प्र.) पृ.4, 5, 6.

[4]. शास्त्री, दिवाकर, 'गीता का नीति शास्त्र', 2007-2008, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।

[5]. कृष्ण कृपामूर्ति श्रीमद्भगवत गीता (यथारूप), 2014, भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट, हरे कृष्ण धाम, जुहू, मुम्बई, पृ.63.

[6]. शास्त्री, दिवाकर, 'गीता का नीति शास्त्र', 2007-2008, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, पृ.1-2.

[7]. तिलक, लोकमान्य, श्रीमदभगवत गीता रहस्य, 2016, जेड एक्स पब्लिकेशन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, पृ.17.

[8]. गांधी, एम.के., गीता माता, 2006, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।

[9]. महर्षि अरविन्द, गीता प्रबन्ध, 1942, हिंदी प्रचार प्रेस, त्याग रामनगर मद्रास, पृ.23.

[10]. https://www.education.gov.in राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार।

[11]. वही।

[12]. वही।